BSTBPC 2018

प्रतिपूर्ति

अँधेरे में चीख

कहानी में शब्द न सिर्फ रपट की तरह माध्यम होते हैं, न कविता की तरह स्वायत्त होते हैं। उनके भीतर एक तनाव भरी चमक रहती है। एक कहानी बाहर की दुनिया की रपट को अपने सत्य की भाषा में परिणत करती है। जिंदगी और कला के बीच मँडराते हुए कहानी का सत्य शब्द में बिंधा रहता है और यही शब्द वाक्यों में बिंधे रहते हैं, और एक वाक्य दूसरे वाक्य की तरफ जाता हुआ एक ऐसा जाल बुनता है जिसमें जीवन की धड़कन को फाँस लिया जाता है।

– निर्मल वर्मा

रस्सी का टुकड़ा

गाइ-डि मोपासाँ (1850-1893)

मोपासाँ फ्राँस के थे । 1870-90 के बीच उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ, छह उपन्यास, तीन यात्रा-पुस्तकें और कविता की एक पुस्तक प्रकाशित हुई । कहानी विधा को आधुनिक रूप देने में उनका स्मरणीय योगदान है । अपने लेखन में उन्होंने बुर्जुआ समाज के चाल-चरित्र को बेपर्द किया है । मानव जीवन की गहराइयों को अभिव्यक्त करने वाला मोपासाँ का लेखन युग की सीमाओं का अतिक्रमण करता हुआ हमारे वर्तमान के लिए भी उतना ही प्रासंगिक और चुनौतीपूर्ण है ।

गोदरविल जानेवाली सड़क पर किसानों और उनकी पत्नियों का सैलाब सा उमड़ा पड़ा था । ये सब उपनगर की ओर जा रहे थे क्योंकि आज साप्ताहिक हाट का दिन था । पुरुष धीरे-धीरे चल रहे थे। उनका शरीर झुका हुआ, बायाँ कंधा कुछ उठा हुआ और टाँगें ऐंठी हुई सी थीं । खेतों पर कड़ी मेहनत ने उनका ढाँचा बिगाड़ दिया था । उनकी नीले रंग की कमीजों पर कसकर माँड़ लगाया गया था जो धूप पड़ने से चमक रही थी । गन्ने और कफ पर सफेद कढ़ाईवाली कमीजें माँड़ की वजह से ऐसे फूली हुई थीं जैसे गुब्बारा उड़ने के लिए तैयार हो । हर गुब्बारे से एक सिर, दो बाँहें और दो पैर बाहर निकले हुए थे।

कुछ लोग गाय या बछड़े को रस्सी से पकड़े चले आ रहे थे और पीछे-पीछे चल रही उनकी बीवियाँ डंडे से पशुओं को हाँक रही थीं । उनके हाथों में बड़ी-बड़ी टोकरियाँ थीं जिनमें से मुर्गे-मुर्गियाँ और बत्तखें झाँक रही थीं । वे अपने पतियों की अपेक्षा अधिक तेजी और जीवंतता के साथ चल रही थीं। ये दुबली-पतली औरतें छोटे से शॉल में लिपटी हुई थीं । उनके सिरों पर एक सफेद कपड़ा बँधा हुआ था जिसके ऊपर उन्होंने टोपी लगा रखी थी । तभी पास से एक घोड़ागाड़ी निकली जिसमें दो पुरुष अगल-बगल बैठे थे और गाड़ी के निचले हिस्से में एक औरत दोनों किनारों को कसकर पकड़े बैठी थी ताकि हिचकोले खाती गाड़ी से गिर न जाए।

गोदरविल के चौराहे पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी । इनसान और जानवर इस भीड़ में मिले हुए थे । जानवरों के सींग, अमीर किसानों की बड़ी-बड़ी टोपियाँ और महिलाओं के स्कार्फ दूर से ही नजर

आ रहे थे । यहाँ का माहौल कोलाहलपूर्ण था जिसमें कभी-कभी किसानों की तेज हँसी और अट्टहास गूँज उठते या फिर किसी दीवार के साथ बँधी गाय का रँभाना सुनाई दे जाता ।

इन सबसे अस्तबल, मवेशियों और गोबर, भूसे और पसीने की गंध फूट रही थी । मनुष्य और पशुओं की एक अजीब सी गंध पूरे वातावरण में फैली थी जिससे किसान भली-भाँति परिचित होते हैं ।

ब्रोत का मैत्र होशेकम अभी-अभी ही गोदरविल पहुँचा था । वह तेजी से चौराहे की ओर कदम बढ़ा रहा था कि उसकी नजर जमीन पर पड़े रस्सी के एक छोटे से टुकड़े की ओर गई । एक सच्चे नॉर्मन की तरह होशेकम का मानना था कि हर काम लायक चीज को उठा लेना चाहिए । जोड़ों के दर्द से पीड़ित होशेकम बड़ी मुश्किल से नीचे झुका और उसने रस्सी के उस टुकड़े को उठा लिया । वह बड़ी सावधानी से रस्सी के उस टुकड़े को लपेट रहा था कि उसकी नजर मैत्र मलांदे पर पड़ी जो अपने घर की देहरी पर खड़ा उसे घूर रहा था । मलांदे घोड़ों की काठी बनाने का काम करता था । कुछ दिन पहले घोड़े की एक जीन को लेकर उनमें विवाद हुआ था और उनके रिश्ते इन दिनों खराब थे । दोनों ही दुश्मनी जल्दी भूलनेवाले नहीं थे । होशेकम को यह सोचकर बड़ी शर्म आई कि उसके दुश्मन ने उसे धूल में पड़ा रस्सी का टुकड़ा उठाते देख लिया है । होशेकम ने रस्सी के टुकड़े को जल्दी से पहले अपनी कमीज के अंदर छुपाने की कोशिश की, फिर उसे अपनी पतलून की जेब में रख लिया, और यह दिखाया कि जैसे वह अब भी जमीन पर कुछ ढूँढ़ रहा है । फिर उसने ऐसे दिखाया जैसे उसे कुछ न मिला हो और गठिए के दर्द से दोहरा हुआ बाजार की ओर चल दिया ।

वह जल्दी ही धीरे-धीरे सरक रही शोर-शराबे भरी भीड़ में खो गया जो खरीद-फरोख्त और घंटों चलनेवाली मोल-तोल में व्यस्त थी । किसान आते थे, भाव पूछते थे और कुछ दूर जाकर फिर लौट आते थे । उन्हें लगातार डर बना रहता था कि कहीं ठग न लिए जाएँ । वे हिचकिचाते रहते और उनका ध्यान हमेशा विक्रेता की ओर लगा रहता और वे यह भाँपने की कोशिश करते रहते कि उन्हें ठगने के लिए वह कौन सी नई तरकीब आजमा रहा है । बिक्री के लिए आए जानवरों के कान से लेकर खुर तक एक-एक चीज परखी जा रही थी ।

औरतें अपनी टोकरियों को जमीन पर रखकर बैठ गई थीं और उनसे बत्तखें और मुर्गियाँ बाहर निकाल ली गई थीं जिनके पाँव आपस में बँधे थे और आँखों में भय साफ नजर आ रहा था । वे ग्राहक की बात सुनतीं और काफी समय तक मोलभाव और ना-नुकुर करने के बाद कीमत थोड़ी सी कम कर देतीं । जब सौदा नहीं पटता और ग्राहक धीमे कदमों से जाने लगता तो वे अचानक आवाज देकर उसे बुलातीं, "ठीक है मैत्र आथिर्न, इतने में ही ले जाइए ।" धीरे-धीरे चौराहे से भीड़ छँटने लगी । दोपहर की प्रार्थना की घंटी बज रही थी और बचे-खुचे लोग दुकानों में चले गए ।

जूर्दे का सार्वजनिक भोजनालय लोगों से भरा हुआ था और उसके अहाते में हर प्रकार के वाहन, बैलगाड़ियाँ, टमटम, छकड़े और छोटी-बड़ी वैगनें खड़ी हुई थीं । कुछ धूल से लथपथ थे और कुछ में जगह-जगह कीचड़ के धब्बे लगे थे । कुछ का अगला सिरा हवा में उठा था तो कुछ का अगला सिरा जमीन पर और पिछला हिस्सा हवा में था ।

लंबी-लंबी मेजों पर बैठे खानेवालों के दूसरी तरफ बड़ी सी भट्ठी थी जिसमें से उठ रही लपटें

दाहिनी ओर बैठे लोगों की पीठ को गर्मा रही थीं । तीन बड़ी-बड़ी सीकों पर मुर्गे, कबूतर और भेड़ की रानें भूनी जा रही थीं और भुने हुए मांस तथा गाढ़े शोरबे की महक से खानेवालों के दिल मचल रहे थे और सबके मुँह में पानी आ रहा था ।

इलाके के तमाम खाते-पीते लोग मैत्र जूर्दे के भोजनालय में खाते थे । वह घोड़ों का व्यापार भी करता था और बड़ा दुष्ट आदमी माना जाता था ।

गर्मागर्म लजीज पकवानों की रकाबियाँ आ रही थीं और थोड़ी ही देर में खाली हो जा रही थीं । हर कोई अपनी खरीद-फरोख्त, फसलों और दूसरे मामलों के बारे में बात कर रहा था । मौसम हरी सब्जियों के लिए तो ठीक था पर गेहूँ के लिए अच्छा नहीं था ।

अचानक बाहर अहाते में नगाड़ा पीटने की आवाज सुनाई दी । कुछ स्थितप्रज्ञ लोगों को छोड़ बाकी सब उठकर दरवाजे या खिड़कियों की ओर भागे । उनके मुँह अब भी भरे थे और हाथों में रूमाल थे ।

मुनादी करनेवालों ने नगाड़ा पीटना बंद कर दिया और अपनी कर्कश आवाज में मुनादी शुरू कर दी :

'गोदरविल के सभी निवासियों और बाजार में मौजूद सभी लोगों को सूचित किया जाता है कि आज सुबह नौ से दस बजे के बीच बेंजेविल जानेवाली सड़क पर एक काले चमड़े का बटुआ खो गया है जिसमें पाँच सौ फ्रेंक और व्यापार से संबंधित जरूरी कागजात हैं । पानेवाले से गुजारिश है कि वह इसे फौरन मेयर के कार्यालय को या फिर मानविल के मैत्र फोरत्यून हूलब्रेक को लौटा दें । ऐसा करनेवाले को बीस फ्रेंक का इनाम दिया जाएगा ।'

फिर वह वहाँ से चला गया । नगाड़े की ढमढम और मुनादीवाले की आवाज कुछ दूर से फिर सुनाई दी । भोजनालय में बैठे लोगों को अब एक नया मुद्दा मिल गया । ये अब यह बात कर रहे थे कि मैत्र हूलब्रेक को बटुआ मिल पाएगा या नहीं । खाना खत्म करके वे कॉफी पी रहे थे तभी देहरी पर एक सशस्त्र पुलिस अफसर प्रकट हुआ ।

उसने पूछा, ''क्या ब्रोत के रहनेवाले मैत्र होशेकम यहाँ पर मौजूद हैं ?'' मेज के दूसरे सिरे पर बैठे मैत्र होशेकम ने जवाब दिया, ''हाँ, मैं यहाँ हूँ ।''

अफसर ने कहा, ''मैत्र होशेकम, क्या आप मेरे साथ मेयर के कार्यालय में चलने की जहमत उठाएँगे ? मेयर आपसे बात करना चाहते हैं ।''

किसान परेशान हो उठा । उसने गिलास एक घूँट में खाली किया और उठकर चल दिया । गठिए की वजह से वह सुबह से भी ज्यादा झुक गया था और बार-बार दोहरा रहा था, ''हाँ, हाँ, मैं चल रहा हूँ, मैं चल रहा हूँ ।''

मेयर हत्थेवाली कुर्सी पर बैठा उसका इंतजार कर रहा था । वह इस इलाके का नोटरी भी था । वह एक मोटा और गंभीर किस्म का इंसान था जिसे भारी-भरकम शब्द बोलने की आदत थी ।

उसने कहा, ''मैत्र होशेकम, आज सुबह आपको बेंजेविल जानेवाली सड़क पर मानविल के मैत्र हूलब्रेक का गिरा हुआ बटुआ उठाते हुए देखा गया था ।''

किसान भौंचक्का सा मेयर को देख रहा था । वह अपने ऊपर शक किए जाने से एकदम घबरा गया था ।

"मैं ? मैं ? मैंने बटुआ उठाया ?"

"हाँ, तुमने, तुम्हीं ने ।"

"ईमान कसम, मैंने इस बारे में कभी सुना भी नहीं ।"

"लेकिन तुम्हें ऐसा करते हुए देखा गया है ।"

"देखा गया है, मुझे ? किसने कहा कि उसने मुझे देखा है ?"

"मोस्यू मलांदे, काठी बनानेवाले ने ।"

बूढ़े को सुबह की घटना याद आई, और सारा मामला उसकी समझ में आ गया । गुस्से से उसका चेहरा लाल हो गया ।

"ओह, तो उसने मुझे देखा, अंधा कहीं का । उसने मुझे यह रस्सी उठाते देखा था, मोस्यू मेयर ।"

उसने अपनी जेब में ढूँढ़कर रस्सी का वह टुकड़ा निकाला ।

लेकिन मेयर ने संदेहभरी दृष्टि उस पर डाली और कहा, "तुम चाहते हो मैत्र होशेकम, कि मैं इस बात पर विश्वास कर लूँ कि मैत्र मलांदे जो एक विश्वसनीय व्यक्ति है, इस रस्सी को बटुआ समझ बैठा !"

नाराज किसान ने अपना हाथ उठाया, एक ओर थूका और कहा, "लेकिन सच यही है मोस्यू मेयर ! मैं अपनी आत्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ ।"

मेयर ने आगे कहा, "बटुआ उठाने के बाद तुम काफी देर तक खड़े होकर धूल में देखते रहे कि कहीं कुछ पैसा गिर तो नहीं गया है ।"

क्षोभ और डर से बेचारे बूढ़े आदमी का गला रुँध गया ।

"भला कोई कैसे....भला कोई कैसे इस तरह का झूठ बोल सकता है....इस तरह एक ईमानदार आदमी की प्रतिष्ठा कैसे खराब कर सकता है ! भला कोई कैसे...."

उसके विरोध का कोई मतलब नहीं था । कोई भी उस पर विश्वास करने को तैयार नहीं था । मोस्यू मलांदे को भी वहाँ बुलाया गया जिसने अपने आरोप को दोहराया । वे एक घंटे तक एक-दूसरे को भला-बुरा कहते रहे । मैत्र होशेकम के अनुरोध पर उसकी तलाशी ली गई जिसमें कुछ नहीं मिला ।

आखिरकार खीजकर मेयर ने उसे इस चेतावनी के साथ छोड़ दिया कि वह सरकारी वकील से बात करके फिर कोई आदेश जारी करेगा ।

यह खबर आग की तरह चारों ओर फैल गई थी । जैसे ही वह मेयर के दफ्तर से निकला तो लोगों की भीड़ ने बूढ़े आदमी को घेर लिया और उससे तरह-तरह के सवाल करने लगे । उसने रस्सी के टुकड़ेवाली कहानी सुनाई लेकिन किसी ने उस पर यकीन नहीं किया । लोग उस पर हँसने लगे ।

जगह-जगह उसे जान-पहचान वाले मिलते और वह सबको एक ही बात बताता । वह सबको अपनी जेबें उलटकर दिखाता यह साबित करने के लिए कि उसके पास कुछ नहीं है ।

वे कहते, ''बुढ़ापे में ऐसा करते शर्म नहीं आती, चले जाओ यहाँ से ।''

उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था । उसे इस बात से खीज होने लगी थी कि कोई भी उसकी बात पर विश्वास करने को तैयार नहीं है । उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और बार-बार एक ही बात दोहराए जा रहा था ।

रात घिरने लगी थी । उसे वापस लौटना था । वह तीन पड़ोसियों के साथ लौटने लगा और रास्ते में रुककर उसने वह जगह दिखाई जहाँ से उसने रस्सी का टुकड़ा उठाया था । पूरे रास्ते वह उन्हें अपनी कहानी सुनाता रहा । रात में उसने पूरे गाँव में घूमकर सबको यह कहानी सुनाई लेकिन कहीं किसी ने उस पर यकीन नहीं किया ।

वह रातभर बेचैन रहा ।

अगले दिन दोपहर करीब एक बजे यीमानविल के पशु व्यापारी मैत्र ब्रेतों के एक कर्मचारी मारियस पोमेल ने भरा हुआ बटुआ मानविल के मैत्र हूलब्रेक को लौटा दिया ।

उस आदमी का कहना था कि उसे वह चीज रास्ते में पड़ी मिली थी लेकिन उसे पढ़ना नहीं आता था इसलिए वह इसे घर ले गया और अपने मालिक को दे दिया ।

यह खबर देखते ही देखते पूरे इलाके में फैल गई । मैत्र होशेकम को भी इसकी सूचना दी गई । वह फौरन गाँव में घूमने लगा और इस सुखद अंत के साथ अपनी कहानी फिर से सबको सुनाने लगा । विजय गर्व से वह तनकर चलने की कोशिश कर रहा था ।

''मुझे इस घटना से इतनी तकलीफ नहीं हुई जितनी कि झूठ से । झूठ की वजह से संदेह के घेरे में आ जाने से ज्यादा शर्मनाक और कुछ नहीं होता ।''

वह सारा दिन अपना किस्सा लोगों को सुनाता रहा । कभी वह बड़ी सड़क से गुजरते लोगों को पकड़ता तो कभी मयखाने में बैठे लोगों को तो कभी गिरजाघर से बाहर आ रहे लोगों को । वह अजनबियों को रोक-रोककर इसके बारे में बताता । वह अब शांत था । लेकिन फिर भी कोई चीज उसे परेशान कर रही थी । वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या है । उसकी बात सुनते समय लोगों के चेहरे पर हँसी का भाव होता था । लगता था कि उन्हें विश्वास नहीं है । उसे महसूस होता था कि उसके पीठ पीछे वे उस पर टिप्पणियाँ करते हैं ।

अगले सप्ताह मंगलवार को वह गोदरविल के बाजार में गया । उसे कोई काम नहीं था पर वह बस पर इसलिए गया था ताकि इस मामले के बारे में लोगों से बातें कर सके । अपने दरवाजे पर खड़ा मलांदे उसे गुजरता देख हँस पड़ा । क्यों किया उसने ऐसा ?

उसने क्रेकेतो के एक किसान को रास्ते में रोका लेकिन उसने बीच में ही होशेकम की बात काटकर उसके पेट में हल्के से मुक्का मारा और हँसते हुए कहा, ''बदमाश कहीं के !''

फिर वह मुड़कर चल दिया ।

मैत्र होशेकम चकरा गया । उसे बदमाश क्यों कहा गया ?

फिर वह जूर्दे के भोजनालय में जाकर बैठा और वहाँ भी उसने अपनी बात छेड़ दी । मोर्न विलियस से आए घोड़ों के एक सौदागर ने आवाज लगाई, "चलो, चलो, चालाक बूढ़े, ये तो बड़ी पुरानी चाल है । मैं तुम्हारे रस्सी के टुकड़े के बारे में सबकुछ जानता हूँ ।"

होशेकम ने हकलाते हुए कहा, "लेकिन अब तो बटुआ मिल गया है ।"

दूसरे आदमी ने जवाब दिया, "चुप रहो बुढ़ऊ, एक बटुआ उठाता है और दूसरा उसे लौटाता है । जो भी हो, तुम इसमें शामिल जरूर हो ।"

होशेकम अवाक् रह गया । उसे सारी बात समझ में आ गई । वे उस पर इल्जाम लगा रहे थे कि उसने अपने एक साथी से बटुआ लौटवा दिया था क्योंकि बात खुल गई थी ।

उसने विरोध करने की कोशिश की लेकिन सब एक साथ ठठाकर हँस पड़े । वह खाना भी खत्म नहीं कर सका और उनके फिकरों और ठहाकों के बीच बाहर निकल गया ।

वह क्षोभ और शर्मिंदगी से भरा वापस लौटा । गुस्से और भ्रम के कारण वह कुछ बोल नहीं पा रहा था । वह इस बात से और हताश था कि वह अक्सर अपनी नॉर्मनोंवाली चालाकी की डींग हाँका करता था । उसे लग रहा था कि इसी वजह से लोगों को उस पर लगे इल्जाम का यकीन हो गया था । उसे लग रहा था कि अपनी बेगुनाही साबित करना नामुमकिन होगा क्योंकि अपनी चालबाजियों के लिए वह विख्यात था । लेकिन इस अन्यायपूर्ण संदेह से उसका कलेजा छलनी हुआ जा रहा था ।

उसने फिर एक बार सारा घटनाक्रम लोगों को बताना शुरू किया । हर दिन उसका किस्सा लंबा होता जाता था क्योंकि हर बार वह अपनी बेगुनाही के पक्ष में कुछ नए कारण, कुछ नए तर्क और पहले से भी ज्यादा संजीदा कसमें जोड़ता रहता था जिन्हें वह अपने एकांत समय में सोचता रहता था । उसका पूरा दिमाग अब रस्सी के किस्से में लग गया था । बचाव के उसके तर्क जितने ही जटिल और उसकी दलीलें और कसमें जितनी ज्यादा जोशीली होती जातीं, लोग उस पर उतना ही कम विश्वास करते ।

उसकी पीठ पीछे लोग कहते, "ये सब झूठे बहाने हैं ।"

वह इसे महसूस करता था, दिल ही दिल में घुला जा रहा था और बेकार की कोशिशों में अपने को खपाए डाल रहा था । लोगों की आँखों के सामने ही वह दिन-ब-दिन कमजोर होता गया ।

गाँव के आवारा छोकरे अब मजा लेने के लिए रस्सी का किस्सा सुनाने के लिए कहते, जैसे किसी अभियान से लौटे सिपाही को अपनी लड़ाइयों का किस्सा सुनाने को कहा जाता है । उसका दिमाग अब अक्सर भटकने लगा था ।

दिसंबर का अंत आते-आते उसने बिस्तर पकड़ लिया ।

जनवरी के शुरुआती दिनों में उसकी मौत हो गई । मरने के पहले तक वह सन्निपात में भी अपनी बेगुनाही का दावा करता रहा और यह दोहराता रहा, "रस्सी का एक टुकड़ा, रस्सी का एक टुकड़ा....देखिए ....यह रहा, मोस्यू मेयर !"

❑❑❑